श्रीधर भास्कर वर्णेकर-कृत
'श्रीशिवराज्योदयम्'
महाकाव्य का
साहित्यशास्त्रीय अध्ययन

'देववाणी-परिषद्, दिल्ली'-ग्रन्थाङ्कः-११०

श्रीधर भास्कर वर्णेकर-कृत

'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन

[दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएच०डी० (संस्कृत) उपाधि प्राप्त शोध प्रबन्ध]

लेखक :

डॉ० अभिनव शुक्ल

एम०ए०, एम०फिल्०, पीएच०डी० (संस्कृत)

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

देववाणी-परिषद्, दिल्ली

आर ६, वाणी-विहारः,

नयी दिल्ली-११००५९ (भारतम्)

श्रीधर भास्कर वर्णेकर-कृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन (पीएच०डी० शोधप्रबन्ध)

लेखक : डॉ० अभिनव शुक्ल

प्रकाशक : देववाणी-परिषद्, दिल्ली
आर-6, वाणी विहार,
नयी दिल्ली-110059 (भारत)
दूरभाष: 28561846

मुद्रक : प्रवीण प्रिंटिंग सर्विस
35, टी एक्सटैंशन, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059 फोन : 25332755

संस्करण : प्रथम संस्करण 2007
संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण 2008

मूल्य : आठ सौ रुपये रु० 800.00

ISBN 978-81-85924-01-4

© लेखक

Śrīdhara Bhāskara Varṇekara Kṛta 'Śrīśivarājyodayam' Mahākāvya Kā Sāhityaśāstrīya Adhyayana (Ph.D. Thesis)

Author : Shukla, Dr. Abhinav

Publisher : Devavani Parishad, Delhi
R-6, Vani Vihar, New Delhi-110059 (India)
Phone : 28561846

Printer : Parveen Printing Service
35, T, Extn., Uttam Nagar,
New Delhi-110059 Ph. : 25332755

Edition : First Edition 2007
Revised and Enlarged Edition 2008

Price : Rupees Eight hundred only Rs. 800.00

विषय-सूची

		पृष्ठ संख्या
	विषय-सूची	(i-ii)
(क)	प्रास्ताविकम्–डॉ० रमाकान्त शुक्लः	(iii)
(ख)	अधिसंशोधितपरिवर्धितसंस्करणम्–डॉ० रमाकान्त शुक्लः	(iv)
(ग)	सम्मति–डॉ० रामकरण शर्मा	(v-vi)
(घ)	शुभाशीः–डा० सत्यव्रत शास्त्री	(vii)
(ङ)	अभिमत–प्रो० मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी	(viii)
(च)	हार्दिक बधाई–डा० हरिनारायण दीक्षित	(ix)
(छ)	बुधयशो लभस्व–डा०रहसबिहारी द्विवेदी	(x)
(ज)	शुभकामना–प्रो० श्रीधर वसिष्ठ	(xi)
(झ)	Congratulations—Dr. C. Upender Rao	(xii-xiv)
(ञ)	नान्दीवाक्–प्रो० राजेन्द्र मिश्र	(xv-xvii)
(ट)	शुभसन्देशः–प्रो० वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री	(xviii)
(ठ)	शुभाशंसन–डॉ० चन्द्रभूषण झा	(xix-xx)
(ड)	भूमिका–डॉ० अभिनव शुक्ल	(xxi-xxiv)
(ढ)	विद्वद्दर्पण का चित्र	(xxv)
(ण)	समर्पण	(xvi)
(त)	शोधप्रबन्धप्रकाशन का अनुमतिपत्र	(xxvii)
(थ)	शोधोपाधिपत्र	(xxviii)
1.	प्रथम अध्याय	1-46
	(क) साहित्यशास्त्र में निर्धारित महाकाव्य का स्वरूप, विकास एवं आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों का रूपवैशिष्ट्य	
	(ख) डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' का महाकाव्यत्व : परम्परा और प्रयोग	

2. द्वितीय अध्याय 47-84

'श्रीशिवराज्योदयम्' की वस्तु योजना

3. तृतीय अध्याय 85-254

'श्रीशिवराज्योदयम्' के नायक तथा अन्य पात्र

4. चतुर्थ अध्याय 255-338
'श्रीशिवराज्योदयम्' की रस योजना एवं वर्णन विच्छित्ति

5. पंचम अध्याय 339-490

'श्रीशिवराज्योदयम्' में गुण, रीति, अलंकार, छन्दोयोजना तथा संगीतात्मकता

6. षष्ठ अध्याय 491-506

'श्रीशिवराज्योदयम्' में समकालीन युगबोध

7. सप्तम अध्याय 507-536

'श्रीशिवराज्योदयम्' का वैचारिक पक्ष

8. अष्टम अध्याय 537-546
उपसंहार

9. परिशिष्ट : 547-557
सन्दर्भ तथा सहायक ग्रन्थ सूची

(मौलिक ग्रन्थ, शोध ग्रन्थ, कोश ग्रन्थ तथा पत्र-पत्रिकाएं)

10. शुद्धिपत्र

प्रास्ताविकम्

'देववाणी-परिषद्, दिल्ली'त्याख्याया: संस्थाया उद्देश्येषु सद्ग्रन्थ-प्रकाशनमप्यन्यतममस्ति । तदनुसृत्य परिषदाद्यावधि १०९ संख्याका: संस्कृत-साहित्यपरका: समीक्षात्मका रचनात्मकाश्च ग्रन्था: प्राकाश्यं नीता:। एषु केचन ग्रन्था हिन्दी-भाषामाध्यमेन संस्कृतसाहित्यं विमृशन्ति तद्यथा–(१) कालिदास की कला और संस्कृति (ले० डा० देवीदत्त शर्मा), (२) संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना (ले० डा० हरिनारायण दीक्षित) (३) अध्यात्मरामायण में अध्यात्म चिन्तन (ले० पं० त्रिगुणानन्द शुक्ल)। इदानीं परिषद् डा० अभिनव शुक्ल-ग्रथितं "श्रीधर भास्कर वर्णेकरकृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन" इत्याख्यं शोधप्रबन्धं दशोत्तरशतसंख्याकग्रन्थरूपेण प्रकाशयन्ती हर्षमनुविन्दति ।

डा० अभिनवशुक्लमहाभागेनास्य शोधप्रबन्धस्याष्टस्वध्यायेषु लब्ध साहित्याकादेमीपुरस्कारस्य राष्ट्रपतिसम्मानितस्य सुप्रसिद्धसंस्कृतमहाकवे: डॉ० श्रीधरभास्करवर्णेकरस्य (३१.७.१९१८–१०.४.२०००) अष्टषष्टिसर्गात्मकं पञ्चषष्ट्युत्तराष्टशतोत्तरत्रिसहस्रपद्यात्मकं महाकाव्यं श्रीशिवराज्योदयं साहित्य-शास्त्रीयदृशा परिशीलितम्। डा० शुक्लेन महाकाव्यस्यास्य वस्तुयोजनां, नायकादिपात्रपरिकल्पनां, रसयोजनां, वर्णन-विच्छित्तिं, गुणरीत्यलङ्कारच्छन्दोयोजनां, सङ्गीतात्मकतां, समकालीनयुगबोधं, वैचारिकतां चावलम्ब्य सुष्ठु विचारितम् । तेन महाकाव्यानामिदानीन्तस्वरूपमाश्रित्यापि विचारितम्। मन्येऽस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनेन विंशशताब्द्यां प्रणीतं प्रकाशितञ्च 'श्रीशिवराज्योदय'-महाकाव्यमवलम्ब्य राष्ट्रभाषामाध्यमेन पुष्कलसामग्री जिज्ञासुभ्य: सुलभा स्यात् ।

अहं परिषत्पक्षतो डा० अभिनवशुक्लमहाभागायाभिनन्दनानि वर्धापनानि च व्याहरामि येन स्वग्रन्थस्य प्रकाशनमितोऽनुमतम् ।

विदुषां वशंवद:

(डॉ० रमाकान्त शुक्ल:)

महासचिव:

देववाणी-परिषद्, दिल्ली

आर-६, वाणी-विहार:, नयी दिल्ली-११००५९

२१-८-२००७

देववाणी-परिषदो द्वात्रिंशत्तम:

सङ्कल्पनादिवससमारोह:

अधिसंशोधितपरिवर्धितसंस्करणम्

अस्य ग्रन्थस्य प्रथमं संस्करणं २००७ तमे खैष्टेऽब्दे प्रकाशितमासीत् । प्रथमसंस्करणस्य विद्वद्दर्पणं देववाणी-परिषदा २६.१०.२००७ तारिकायां समायोजिते विंशतितमे 'पण्डितराज-महोत्सवे' विश्वविश्रुतैः डा० रामकरणशर्मभिः कृतम् । १२.११.२००७ तमे दिनांके तैर्ग्रन्थमिममवलम्ब्य स्वसम्मतिरपि दत्ता । ततः परं प्रो० सत्यव्रतशास्त्रिभिः, प्रो० मिथिलाप्रसादत्रिपाठिभिः, प्रो० हरिनारायणदीक्षितैः, प्रो० रहसबिहारीद्विवेदिभिः, प्रो० श्रीधरवसिष्ठैः, डा० चौडूरि उपेन्द्रावैः, प्रो० 'अभिराज'राजेन्द्रमिश्रैः किञ्च प्रो० वेम्पटिकुटुम्बशास्त्रिभिः ग्रन्थमिमवलम्ब्य स्वसम्मतयः प्रहिताः । अस्मिन् संशोधितपरिवर्धितसंस्करणे ताः सम्मतयोऽपि संयोज्यन्ते । किञ्च ग्रन्थस्य विद्वद्दर्पणद्योतकं चित्रमपि दीयते । सम्मतिदानार्थं सर्वेषामपि विदुषामाभारमावहामि ।

कृतेऽपि प्रयत्ने मुद्रणगत-त्रुटीनामत्यन्ताभावः कर्तुं नापार्यत । यद्यपि दोषज्ञानां विपश्चितां कृते शुद्धिपत्रमनपेक्षितमेव तथापि सामान्यपाठकेभ्य इदं ग्रन्थान्ते दीयते । इतः परमपि यदि त्रुटयो दृष्टिगताः स्युस्तदा तत्कृते वयं क्षन्तव्याः स्मः ।

ग्रन्थस्य अक्षरयोजनार्थं मुद्रणार्थं च 'प्रवीण प्रिंटिंग सर्विस'-स्वामिनो धन्यवादार्हाः सन्ति ।

विदुषां वशंवदः

(डॉ० रमाकान्त शुक्लः)
महासचिवः
देववाणी-परिषद्, दिल्ली
आर-६, वाणी-विहारः, नयी दिल्ली-११००५९

१८-७-२००८
गुरुपूर्णिमा
वि०सं० २०६५

डॉ० रामकरण शर्मा
पूर्वकुलपति,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
पूर्वकुलपति,
कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा
अध्यक्ष,
इंटरनेशनल एसोसियेशन ऑफ संस्कृत स्टडीज
(IASS)

63, विज्ञान विहार,
नयी दिल्ली-110092
फोन : 22150045
दि० 12.11.2007

सम्मति

महाकवि भास ने कहा है :

गुणानां वा विशालानां सत्काराणां च नित्यशः ।
कर्त्तारः सुलभा लोके विज्ञातारस्तु दुर्लभाः ॥

डॉ० अभिनव शुक्ल द्वारा विरचित "श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन"-शीर्षक शोधप्रबन्ध महाकवि भास के उपर्युक्त उद्‌गार के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा के जिज्ञासुओं के लिए एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति करता है । यह हमारा सौभाग्य है कि आसेतुहिमाचल अनेक रचनाकार संस्कृत में उत्कृष्ट कोटि की रचनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं । किन्तु हम अब तक ऐसा कोई मार्ग प्रशस्त नहीं कर पाए हैं जिससे हम आधुनिक रचनाओं या रचनाकारों के सम्बन्ध में सर्वाङ्गीण जानकारी प्राप्त कर सकें।

मेरी दृष्टि में आयुष्मान् अभिनव शुक्ल की यह भव्य कृति किसी संस्कृत महाकवि की किसी एक उत्कृष्ट रचना के सर्वाङ्गीण अध्ययन की दिशा में प्रथम एवं अत्यन्त प्रशंसनीय, अभिनन्दनीय प्रयास है ।

पाश्चात्त्य आलोचनाशास्त्र में आलोचक को रचनाकार की 'आल्टर ईगो' (दूसरी आत्मा) का स्थान प्रदान किया गा है । एक ओर वर्णेकर जैसा रससिद्ध कवीश्वर और दूसरी ओर अभिनव शुक्ल जैसा तरुण अध्यवसायी शोधप्रज्ञ 'स्फीतायति'आलोचक। दोनों परम्परा का आदर करते हैं । साथ-साथ दोनों ही स्वस्थ आधुनिकता या 'पुराणरीतिव्यतिक्रम' का भी अभिनन्दन करते हैं । चाहे हम 'सहितस्य भावः' को या 'हितेन सहभाव' को साहित्य मानें, यह स्वस्थ

परम्परा एवं स्वस्थ आधुनिकता का संगम ही 'रमणीयार्थप्रतिपादकता' का स्थान ग्रहण कर सकता है। प्रस्तुत कृति में यह संगम तो अपनी रमणीयता अभिव्यक्त कर ही रहा है। प्रख्यात कवीश्वर वर्णेकर जी की 'कारयित्री' प्रतिभा तथा आयुष्मान् उदीयमान तरुण आलोचक की 'भावयित्री' प्रतिभा (यशस्वी विद्वान् चन्द्रभूषण झा जी की पथप्रदर्शनात्मक प्रतिभा भी इसमें अन्तर्निहित है) का यह परम रमणीय संगम हमें विशेष रूप से प्रभावित करता है।

आशा है अभिनव जी की लेखनी उत्तरोत्तर अभिनव संस्कृत रचनाओं की अभिनव सर्वाङ्गीण आलोचना की दिशा में सदैव अग्रसर होती रहेगी और उसके माध्यम से न केवल आधुनिक संस्कृत रचनाओं के सम्बन्ध में लोगों को जानकारी प्राप्त होगी अपितु साथ-साथ प्राचीन एवं आधुनिक आलोचनाविज्ञान, छन्दोविज्ञान आदि के संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पक्षों के प्रचार-प्रसार में भी इसका अमूल्य योगदान होगा।

धन्यो भवानभिनव-
स्तथैव धन्याऽस्ति लेखनी भवतः ।
भवतु भवानायुष्मान्
प्रतिभामुभयीं समेधयन्ननिशम्॥

रामकरण शर्मा

(रामकरण शर्मा)

डॉ० सत्यव्रत शास्त्री
पूर्व कुलपति,
श्रीजगन्नाथ संस्कृत वि०वि०, पुरी

सी-248, डिफेंस कालोनी
नई दिल्ली-110024
दिनांक 2.12.2007

शुभाशीः

मैंने आयुष्मान् डॉ० अभिनव शुक्ल प्रणीत "श्रीधर भास्कर वर्णेकरकृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्य-शास्त्रीय अध्ययन"शीर्षक ग्रन्थ का अवलोकन किया। श्रीशिवराज्योदयम् संस्कृत वाङ्मय के दो तीन बृहत्कलेवर महाकाव्यों में से है। कभी समय था जब यह सब से बड़ा काव्य था। पर इधर दो-एक और आ गये हैं जिनमें सर्ग संख्या इससे कुछ अधिक हैं।

'श्रीशिवराज्योदयम्' के प्रणेता डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर संस्कृत वाङ्मय के अत्यधिक समादृत कवि हैं। एक अन्य विशेषता जो उन्हें अन्य कवियों से पृथक् करती है वह यह है कि वे कवि के साथ-साथ संगीतज्ञ भी थे। एक बार इन पंक्तियों के लेखक से बातचीत करते समय अपने विषय में उन्होंने कहा था—अहं साङ्गीतिकोऽस्मि। सांगीतिक होने के कारण उनकी रचना में एक लयात्मकता है जो उसे बहुत आकर्षक बना देती है।

डॉ० वर्णेकर की एक अन्य विशेषता है उनका सरल सरस पद प्रयोग। यथास्थान अलंकारों के प्रयोग से उनकी रचना मण्डित है। रसों और भावों का भी उसमें आवश्यकतानुसार उन्मेष है। इन सब दृष्टियों से 'श्रीशिवराज्योदयम्' का समीक्षण आवश्यक था। जिसे डा० अभिनव शुक्ल ने बहुत ही सूक्ष्मेक्षिका से प्रस्तुत किया है। उनका परिश्रम उनके ग्रन्थ में पदे-पदे झलकता है। इस श्रेष्ठ समीक्षात्मक ग्रन्थ के प्रणयन हेतु डॉ० अभिनव शुक्ल हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं।

सत्यव्रत शास्त्री

(सत्यव्रत शास्त्री)

प्रो० मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी
डी०लिट्० (संस्कृत) पी-एच्०डी०
(संस्कृत, हिन्दी)
निदेशक

कालिदास संस्कृत अकादमी
म०प्र० संस्कृति परिषद्, उज्जैन
क्रमांक : का०अ०07/1182
दिनांक 5-12-2007

अभिमत

डा० अभिनव शुक्ल के प्रकाशित शोधप्रबन्ध 'श्रीधर भास्कर वर्णेकरकृत श्रीशिवराज्योदयम् महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन' का अध्ययन मनोमोदकारी है। केवल सात अध्यायों में ही 68 सर्गों के महाकाव्य का अनुशीलन करते हुए श्री शुक्ल ने अपनी साहित्यशास्त्रीय प्रतिभा का भी निरन्तर परिचय दिया है। अन्तरंग और बहिरंग प्रमाणों के द्वारा अपने प्रतिपाद्य एवं अवधारणा को दृढ़ता से मुखरित किया है। वस्तु योजना हो या पात्रविवेचन, रस योजना हो या गुणरीत्यलंकार छन्दोयोजना, समकालीन युगबोध हो या वैचारिक पक्ष, अभिनव समीक्षण से प्रबन्ध को सर्वांग सम्पूर्ण किया गया है। 'वस्तु' के शास्त्रीय पक्षों को आलोडित एवं समीक्षित कर शिवराज्योदयम् से उदाहरण दिया है। इसी प्रकार नायक, रस गुणादि के विवेचन में भी शोध निबन्धक ने अपनी प्रतिभा की पटुताको निदर्शित किया है। प्रत्येक अध्याय में महाकाव्य के विषय की समीक्षा के पूर्व साहित्यशास्त्रीय उल्लेखों के आलोक में समीक्षा कर दी गयी है। इसके बाद समीक्ष्य ग्रन्थ के सोदाहरण विवेचन मिलते हैं। यह प्रबन्ध अन्य अनुसंधाताओं के लिए दिशा बोध करता है कि शैली, प्रतिपादन, विषयोपस्थापन, स्वमत निरूपण, तथ्याकलन, भाषिक सारल्य और औदात्य सब में अभिनव प्रतिभा का प्रस्फुटन कैसे हो। कहीं भी विवेचन में कार्पण्य नहीं है। सर्वत्र व्यासशैली का ही प्राबल्य है। श्रीधर भास्कर वर्णेकर के इस महाकाव्य का समग्र अनुशीलन यहां उपलब्ध है। साहित्यशास्त्रीय समीक्षा, रचना के साथ युग बोध और वैचारिक पक्ष को जोड़ कर रचनाकार की अभिव्यक्ति को समग्रता से समीक्षित परीक्षित किया गया है। इस ग्रन्थ के अनुशीलन के व्याज से श्री वर्णेकर और उनकी प्रतिभासरणि का सहज ही बोध सम्भव हो जाता है। राष्ट्रभक्त कवि के अवदान को पढ़ समझकर 68 सर्गों को पढ़ने की इच्छा सद्यः समुत्पन्न हो जाती है। डा० अभिनव शुक्ल के इस महत्त्वपूर्ण प्रबन्ध के लिए साधुवाद एवं बधाइयां।

(मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी)

डा० हरिनारायण दीक्षित
एम०ए०, पीएच०डी०, डी०लिट्०,
व्याकरणाचार्य, सांख्ययोगाचार्य, साहित्यरत्न,
राष्ट्रपतिसम्मानप्रमाणपत्रपुरस्कारप्राप्त,
पूर्व प्रोफेसर एवं संस्कृतविभागाध्यक्ष,
पूर्व अधिष्ठाता, कला संकाय,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

दूरभाष : 05924-236981
आवास : 196, बड़ा बाजार,
मल्लीताल,
नैनीताल-263001
(उत्तराखण्ड)

दिनांक 15 दिसम्बर, 2007

हार्दिक बधाई

संस्कृत साहित्य-जगत् में अपने समय के सर्वतो लब्धप्रतिष्ठ, साहित्यकार एवं महाकवि स्वर्गीय डॉक्टर श्रीधर भास्कर वर्णेकर विरचित 'श्रीशिवराज्योदयम्' नामक महाकाव्य पर डा० अभिवन शुक्ल द्वारा की गई और देववाणी परिषद्, आर-6, वाणी-विहार, नई दिल्ली-110059 द्वारा ग्रन्थरूप में प्रकाशित हुई साहित्यशास्त्रीय समीक्षा को पढ़कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हुई है। इस ग्रन्थ में आरम्भ से लेकर अन्त तक अनुसंधान की गरिमा को अक्षुण्ण रखा गया है, जो प्रशंसनीय है। आज के युग में हर दिन दुर्लभ होती जा रही समीक्षा की प्रौढिमा और समीक्षा के मानदण्डों की मीमांसा को इस ग्रन्थ में पाकर मेरे मन और मस्तिष्क को यह विश्वास हो गया है कि संस्कृत-साहित्य के समीक्षा-जगत् का भी भविष्य उज्ज्वल है। इस ग्रन्थ की इन विशेषताओं को देखकर मेरा मन कहता है कि संस्कृत-साहित्य के उद्यान की अनुसंधानात्मक शोभा बढ़ाने वालों के बीच यह ग्रन्थ बहुत ही प्रिय होगा।

अतः मैं इस ग्रन्थ का हृदय से स्वागत करता हूं और इसके लेखक डा० अभिनव शुक्ल को इसके लिए हार्दिक बधाई देता हूं; तथा उनसे यह आशा भी करता हूं कि वे अपनी प्रतिभाशाली लेखनी द्वारा समीक्षा के क्षेत्र में ऐसे ही प्रौढ़ ग्रन्थों की अधिकाधिक सृष्टि करते रहें।

(हरिनारायण दीक्षित)

डा० रहसबिहारी द्विवेदी
आचार्य एवं अध्यक्ष
संस्कृत-अध्ययन मण्डल,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर-482001 (म०प्र०)

615, समदड़िया ग्रीन सिटी
माढ़ोताल, जबलपुर-482002
दूरभाष : 0761-2902404
मोबा० 09425383962
दि० 29.11.2007

प्रिय डॉ० अभिनव !

अभिनवेन नवाध्ययनं त्वया
सुकुलशुक्लयशः किरता परम् ।
शिवमये शिवराज्यपरोदये
महति काव्य उदीरितमुत्तमम् ॥

परमभास्वरभास्करवर्णनं
समरसं भरतावनिसंस्कृतौ ।
प्रिय ! समीक्ष्य समाहितचेतसा
बुधमनोहरणं ग्रथितं त्वया ॥

अभिनव ! प्रतिभा प्रसमीक्षणे
प्रसरतां नितरां तव भास्करी ।
कुलकलां कलयन् प्रिय ! संस्कृतां
बुधयशो हि लभस्व निरन्तरम् ॥

सस्नेहं हितैषी

29.11.2007

(रहसबिहारी द्विवेदी)

प्रो० श्रीधर वसिष्ठ
पूर्व कुलपति
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय
संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

7/429, अर्बन स्टेट
गुड़गांव (हरियाणा)-122001
दूरभाष 95124-2306823
दिनांक 5.5.2008

शुभकामना

भारत में आदिकाल से ही यह परम्परा रही है कि शास्त्रों को अगली पीढ़ी के लिए सुलभ बनाने के लिए उनका भाष्य, वृत्ति अथवा टीका लिखी जाए। यास्क ने वेदों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए निरुक्त की रचना की जो अनेक वैदिक ग्रन्थों की व्याख्या के साथ-साथ वैदिक ऋचाओं एवं मन्त्रों का अर्थ भी स्पष्ट करता है। सायण, उवट, महीधर और शबरस्वामी के भाष्यों का वैदिक साहित्य को समझने में बड़ा योगदान रहा है। मनुस्मृति के गंभीर आशयों को समझने के लिए कुलूक भट्ट की व्याख्या विद्वानों में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त है।

संस्कृत साहित्य में काव्यों की एक विशेष परम्परा आदिकवि वाल्मीकि से प्रारंभ हुई और अश्वघोष, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ के रास्ते होती हुई आधुनिक संस्कृत महाकवियों की कृतियों तक अनवरत जारी है। कालिदास के ग्रन्थों को बोधगम्य बनाने के लिए मल्लिनाथ की टीकाओं का विशेष आदर है। आधुनिक काव्यों में श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा रचित 'श्रीशिवराज्योदयम्' पर डा० अभिनव शुक्ल ने विशेष अध्ययन प्रस्तुत किया है जिसमें काव्यशास्त्र के महान् ग्रन्थकारों द्वारा प्रदर्शित काव्यशास्त्रीय मानदंडों के आधार पर उक्त महाकाव्य की समीक्षा की है। जिस प्रकार आनन्दवर्धन के 'ध्वन्यालोक' पर 'लोचन'वृत्ति लिखकर अभिनवगुप्तपादाचार्य ने ध्वन्यालोक को विशेष ख्याति प्रदान की है, उसी प्रकार डा० अभिनव शुक्ल ने साहित्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य के विभिन्न पक्षों की समीक्षा की है। 68 सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में कवि ने शिवराज सदृश उदात्त नायक के चरित का वर्णन करते हुए वीर आदि रसों, अनेक अलंकारों एवं छन्दों का प्रयोग किया है जो कि इसे संस्कृत महाकाव्यों की परम्परा में विशिष्ट स्थान दिलाने में समर्थ हैं। डॉ० अभिनव शुक्ल ने इन सभी पक्षों पर गम्भीरता से अध्ययन करके "श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन" शीर्षक ग्रन्थ को महत्त्वपूर्ण कृति के रूप में प्रस्तुत किया है जिसके लिए वे शुभकामना के पात्र हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कृति विद्वानों द्वारा प्रशंसा प्राप्त करेगी। मैं आशा करता हूं कि डॉ० अभिनव शुक्ल की लेखनी से और अनेक ग्रन्थों की रचना होगी जो उन्हें यशस्वी बनायेगी।

(श्रीधर वसिष्ठ)

विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067

डा० चौडूरि उपेन्दर राव
अध्यक्षचर:
Dr. Choudury Upender Rao
Chairperson (Former) and Associate Professor

दिनांक 20.12.2007

CONGRATULATIONS

The name of Prof. Shridhar Bhasker Varnekar is proverbial in the history of modern Sanskrit literature. Number of works were produced by him. 'Śivarājyodayam' is one of his intellectual and patriotic contributions to Sanskrit literature. According to Sanskrit poetics this poem is identified as 'Mahākāvya'. Ancient Sanskrit scholars have laid down the number of rules and regulations for 'Mahākāvyas'. Vidyānātha in his 'Pratāparudriya Yaśobhūṣaṇam' has defined 'Mahākāvyam' in the following manner,

नगरार्णवशैलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनम् ।
उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥

.. ..

एतानि यत्र वर्ण्यन्ते तन्महाकाव्यमुच्यते ॥

'Viśvanātha' in his 'Sāhityadarpaṇa' gave the detailed picture of 'Mahākāvya',

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः etc.

But modern scholars like Pandit Ramchandra Shukla has added some more characteristics to the definition of 'Mahākāvya'. Prof. Rahasa Bihari Dwivedi has extraordinarily portrayed the complete requirements of 'Mahākāvya' in a single 'Sragdharā' stanza as follows,

सर्गैर्वृत्तैश्च बद्धं सहृदयहृदयाह्लादि शब्दार्थरम्यं,
संवादैश्चोच्चशिल्पैः सततरसमयं ग्रन्थिमुक्तं समृद्धम् ।
पात्रं स्याद् यस्य मुख्यं परमगुणयुतं लोकविख्यातवृत्तं,
भव्यं लोकस्वभावं महदपि महतां तन्महाकाव्यमास्ते ॥

Prof. Varnekar's poem befit all these characteristics and hence it can be treated as 'Mahākāvya', consisting of 68 cantos in it. The composition of this 'Mahākāvya' was started in the year 1958 and ended only in 1968. Hero of this poem is brave and dynamic Hindu king 'Śivāji' and the 'Angi Rasa' (main poetic sentiment) is 'Raśtra Bhakti'. But there is a lot of debate on the 'Angi Rasa' of this poem. We have to note that this 'Raśtra Bhakti' was not mentioned as one of the 'Rasas' in well known 9 'Rasas' in the realm of Sanskrit poetics. But as per the modern Sanskrit writers this 'Raśtra Bhakti' too can be accepted as a "Rasa" in poems. In fact this Bhakti is of two types. 'Raśtra Bhakti' and 'Deva Bhakti'. The 'love on nation' is the 'Sthāyī bhāva' for 'Raśtra Bhakti'. But as per some other scholars the 'Utsāha' of king 'Śivāji' being the 'Sthāyībhāva' of vira, '*Vīra Rasa*' should be the 'Angi Rasa' in this poem. We have to recollect the words of Dr. Gajanana Balakrishna Palsule in this context. He writes,

शृङ्गारो रसराजः शृङ्गारो रसराजः इति कृत्वा दुर्ललित आसीत् शृङ्गारः । वर्णकैरः राष्ट्रभक्तिरसं तत्स्थाने आरोप्य एका कालोचिता आवश्यकता प्रपूरिता (भक्तिरेव रसो वा न वा इति कामं कलहायन्तां शास्त्रकाराः) etc.

'Karuṇā, Śāṇta, Vātsalya, Śṛṅgāra etc. are the 'Aṅga Rasas' of this poem. Dr. Rashas Bihari Dwivedi has tried to give the definition of 'Rāṣṭra Bhakti' in the following manner,

स्थायी भावोऽस्य राष्ट्रस्यानुरागस्तद्धितावहः ।
आलम्बनं च राष्ट्रस्य जीवनाहुतिभावनम् ॥
उद्दीपनं च राष्ट्रस्य शान्तिभङ्गोऽथ वञ्चनम् ।
अनुभावोऽस्य राष्ट्रस्य संरक्षणविचेष्टितम् ॥
व्यभिचारिण एतस्य हुतात्मत्वादिभावना ।
राष्ट्रं सुरक्षितं भातु हेतुनानेन पुष्यते ॥

But in spite of all this Dr. Dwivedi seems to be scared of some orthodox Sanskrit scholars of India who never accept the existence of this new poetic sentiment in the poems. He thus states the *'Vira'* scented with patriotism should be the 'Angi Rasa' of this poem.

This is very sad that today's Sanskrit students are not fond of reading Sanskrit poems. But I strongly feel that every Sanskrit student and scholar should enjoy and experience this blissful patriotic Sanskrit poem 'Śivarājyodayam'.

Dr. Abhinava Shukla, son of renowned Sanskrit poet Dr. Ramakant Shukla, has painstakingly worked on the 'Sāhitya Śāstrīyādhyayanam' of 'Śivarājyodayam'. Though it is a modern investigation, unlike the recent cut paste thesis, it reflects the genuine scholarship of the scholar. The chapterization is good and important topics have been dealt with expansively and adequately. Both; Dr. Chandra Bhushan Jha, the supervisor and Dr. Abhinava Shukla, the scholar deserve the complements for selecting such a beautiful, modern and patriotic long poem for research and thus indicating the innovative potentiality of Sanskrit literature to the modern world. Today's man considers Sanskrit to be dead. But this is just ignorance as one can find the creation of manifold works in Sanskrit literature. If present Sanskrit scholars will adopt the researches on the themes pertaining the modern Sanskrit literature with wider understanding the unhindered growth of Sanskrit literature can be assured and such trend will attract the attention of modern society. Expecting such other works from Dr. Abhinava Shukla, I congratulate him for accomplishment of this great works.

20.12.07

—Dr. C. Upender Rao,
J.N.U.

प्रो० राजेन्द्र मिश्र
पूर्वकुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-221002

टीचर्स कालोनी,
लोअर समर हिल
शिमला-171005
दिनांक 8.12.2007

नान्दीवाक्

चिरंजीवी डॉ० अभिनव शुक्ल के पीएच०डी० शोध प्रबन्ध का लोकोपादेय प्रकाशित संस्करण पढ़कर अभूतपूर्व सुख मिला । मैं स्वयं अब तक राष्ट्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रायः चार सौ से भी अधिक शोधप्रबन्ध देख चुका हूं, परन्तु उन ग्रन्थों की भाषिक अधःस्तरता, समीक्षात्मक अपरिपक्वता तथा गहन शोधाभाव आदि दोषों को देख मन उदास एवं कुण्ठित होता रहा है । इसके लिये शोधच्छात्र ही नहीं, उनके कर्तव्योदासीन निर्देशक भी जिम्मेदार हैं ।

परन्तु अभिनव शुक्ल का शोधप्रबन्ध मेरी उपर्युक्त अवधारणा का अपवाद है । अध्यवसायी युवा अध्येता ने प्रज्ञाभारती आचार्य श्रीधर भास्कर वर्णेकर के लोकविश्रुत महाकाव्य 'श्रीशिवराज्योदयम्' की समीक्षा को अन्वर्थनामता प्रदान की है जिसके कारण यह शोधप्रबन्ध शिववीर विषयक इतिहास, राजनीति, धर्माचरण एवं प्रज्ञानुशासन जानने के लिये सर्वोत्तम आकर ग्रन्थ बन गया है ।

इस शोधग्रन्थ की प्रथम विशेषता है इसकी ऐतिहासिक युक्तियुक्तता। छत्रपति शिवाजि का सम्पूर्ण जीवन दिल्ली-महाराष्ट्र के बीच स्थापित राजशक्तियों से लोहा लेते तथा अपनी पहचान एवं स्थायी राजसत्ता स्थापित करते बीता । इन राजनयिक संघर्षों में उनका सामना बीजापुर-सुल्तान (अली आदिलशाह) अफजल खान, शाइस्ता खान, मुगलसम्राट् औरंगजेब, मुगल सेनापति मिर्जाराजा जयसिंह तथा अनेक मुगल किलेदारों से हुआ। परन्तु साहस एवं शौर्य के सजीव विग्रह शिववीर ने बाजीप्रभु देशपाण्डे, येसाजी, तानाजी मालसुरे तथा ऐसे ही सैंकड़ों अन्य स्वामिभक्त सेवकों के अदम्य पराक्रम से प्रायः समस्त संघर्षों में विजय पाई तथा अन्ततः

उस धर्मराज्य की स्थापना कर सके जिसका स्वप्न जन्मदात्री जीजाबाई, शिक्षागुरु दादा कोण्डदेव तथा आध्यात्मिक गुरु समर्थ स्वामी रामदास ने देखा था । शोधकर्ता ने इन ऐतिहासिक घटनाओं का क्रमिक विवरण प्रस्तुत किया है जिससे उसकी इतिहास विषय में पैठ एवं रुचि सिद्ध होती है।

शोप्रबन्ध की दूसरी विशेषता है काव्यशास्त्रीय मानदण्डों पर उसकी निष्पक्ष समीक्षा । गोकि युवा अध्येता ने इस समीक्षा में नये काव्यशास्त्रकारों की दृष्टि का भी संस्पर्श किया है, तथापि वह 'नहीं' के बराबर है । काश, वह मत्प्रणीत अभिराजयशोभूषणम् की महाकाव्य-परिभाषा में स्थापित नायक के गुणों को दृष्टि में रखकर शिववीर के नायकत्व की समीक्षा करता; क्योंकि यशोभूषण के समस्त मानदण्ड अर्वाचीन रचनाधर्मिता की परिपुष्टियों में ही स्थापित किये गये हैं ।*

प्रभूत श्रम एवं अध्यवसाय प्रदर्शित किया है अभिनव ने 'श्रीशिवराज्योदयम्' की महाकाव्यत्व-सिद्धि में, शिववीर की नायकत्व-सिद्धि में तथा समूचे प्रतिपाद्य की नाट्यशास्त्रीय समीक्षा में । पंच प्रकृतियों, पंच अवस्थाओं तथा पंच सन्धियों में अपना गहन अभिनिवेश तथा अधिकार प्रदर्शित किया है ।

शोधप्रबन्ध का तीसरा महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य है कवि-प्रयुक्त छन्दों के भेदोपभेदों की तालिका विधि द्वारा सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रदर्शन । यह कार्य अत्यन्त कठिन एवं प्रतिभासाध्य था । प्रायः आज के पलायनवादी, अपरिपक्वमति तथा उपाधिप्राप्ति-कातर शोधार्थी ऐसा सात्त्विक श्रम नहीं कर पाते । परन्तु अपने शोधप्रबन्ध में यह सारी मूल्यवान् सामग्री प्रस्तुत कर अभिनव ने स्वयं को 'योग्य पिता की योग्य सन्तति' सिद्ध किया है ।

---

* 'अभिराजयशोभूषणम्' का प्रकाशन जुलाई 2006 में हुआ । शोधप्रबन्ध उससे पूर्व ही 27.12.2005 को प्रस्तुत कर दिया गया था । अतः इसका उपयोग इस शोधप्रबन्ध में करने का सौभाग्य लेखक को नहीं मिल सका ।

(लेखक)

शोधप्रबन्ध में, पात्रों के चरित्रचित्रण, प्रकृतिवर्णन, बिम्बयोजना, रसालंकार योजना, सामाजिक-चित्रण एवं मानवीय संवेदनाओं की व्याख्या में अनुसन्धाता की भावयित्री प्रतिभा के दर्शन होते हैं ।

वस्तुतः अब से पूर्व दो-चार ही शोधप्रबन्ध ऐसे मिले हैं पढ़ने को, जिन पर मन रीझा हो । परन्तु चि० अभिनव का कार्य नवयुगीन अनुसन्धान के क्षेत्र में एक 'मानक' प्रतीत होता है । एतदर्थ शोधकर्ता तथा विद्वान् निर्देशक--दोनों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं ।

निश्चय ही इस शोधप्रबन्ध से शिवसायुज्य-प्राप्त प्रज्ञाभारती डॉ० वर्णेकर को आत्मशान्ति मिलेगी और माँ भारती का भण्डार श्रीवाणी से अलंकृत होगा ।

सस्नेह

अभिराज राजेन्द्र मिश्र

(अभिराज राजेन्द्र मिश्र)

प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री
कुलपति
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय
(मानवसंसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)

Prof. V. Kutumba Sastry
Vice-Chancellor
RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
Deemed University
(Under MHRD, Govt. of India)

दिनांङ्कः 11.05.2008

शुभसन्देशः

विंशशताब्दस्य महाकवेः श्रीधरभास्करवर्णेकरस्य नाम संस्कृतक्षेत्रे सुप्रतिष्ठितमस्ति । संस्कृतभाषया एकविंशतिग्रन्थान् विरचितवतः प्रज्ञाभारतीत्यादि-विरुदभाजः वर्णेकरमहोदयस्य श्रीशिवराज्योदयनामकं महाकाव्यं श्रीछत्रपतिशिवाजी-महाराजस्य जीवनचरितं प्रस्तौति । उपचतुस्सहस्रश्लोकैर्निबद्धे अष्टषष्टिसर्गात्मकेऽस्मिन् बृहत्काये काव्ये राष्ट्रियभावनायाः राष्ट्रियस्वाभिमानस्य च महापूरः वरीवर्ति । ग्रन्थस्यास्य वैशिष्ट्यमवगम्य श्रीमान् अभिनवशुक्लमहोदयः डा० चन्द्रभूषण झा महोदयस्य निदेशने गभीरमनुसन्धानं विधाय "'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन"-नामकं शोधनिबन्धं च विलिख्य शोधोपाधिमवाप्नोत् । अष्टभिरध्यायैः शिवराज्योदयमहाकाव्यस्य अलङ्कारशास्त्रीय-वैशिष्ट्य-स्फोरणाय लेखकेन अभिनन्दनीयः प्रयासः कृतः । रस-वस्तु-वर्णन-गुणालङ्कारच्छन्दसां विषये वैचारिकोत्कृष्टताविषये च विवेचनपुरस्सरं हिन्दीभाषया रचितः एष ग्रन्थः जिज्ञासूनाम् अध्येतृणां च आदरभाग् भवेदित्याशासे । वर्णेकरकृतिरत्नं विद्वल्लोके परिचाययन्तं ग्रन्थलेखकं डा० अभिनवशुक्लं हृदयेनाभिनन्दामि ।

ग्रन्थस्यास्य प्रकाशनं विदधती देववाणी-परिषद् वर्धतामिति, परिषत्पदाधि-कारिणः परिषत्सदस्याश्च ईदृशसारस्वतसेवायां निरताः भवेयुरिति च आशासे ।

(वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री)

डा० अभिनवशुक्लः
आर-6, वाणी-विहारः,
नवदेहली-110059

56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058 Ph. : (O) 28523949 (R) 25085238 Fax : 28521948
EPABX : 28524993, 28521994 Gram : SAMSTHAN E.Mail : vcrsks@vsnl.net Website : www.sanskrit.nic.in

डॉ० चन्द्रभूषण झा
वरिष्ठ प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,
सेण्ट स्टीफन्स महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

दूरभाष : 27662784
ए-11, शिक्षक निवास,
सेण्ट स्टीफन्स कॉलेज,
दिल्ली-110007

शुभाशंसन

प्रज्ञाभारती श्रीधर भास्कर वर्णेकर संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य कवि हैं। उनकी संस्कृत भाषा में समुपनिबद्ध इक्कीस मौलिक कृतियों से वाङ्मय विलसित है। अठारह काव्य मुक्तक, शतक, प्रशस्तिपरक, रागबद्ध प्रभृति कोटि के हैं, दो ग्रन्थ रूपक विधा में प्रणीत हैं एवं एक महाकाव्य है। 1958 से 1968 तक के ग्यारह वर्षों की अवधि में विरचित, 1972 ई० में प्रकाशित 68 सर्गों वाला स्थूलकाय "श्रीशिवराज्योदयम्" महाकाव्य राष्ट्रिय भावना से सर्वतः समुद्भासित है। सर्गों की संख्या की दृष्टि से अपनी रचना एवं प्रकाशन के समय यह संस्कृत साहित्य का महत्तम काव्य था। बाद में पं० श्री ओगेटि परीक्षित शर्मा के "श्रीमत्प्रतापराणायनम्" एवं डॉ० शान्ति भिक्षु शास्त्री के "श्रीबुद्धविजयकाव्यम्" में और भी अधिक सर्गों का समुपयोजन किया गया।

श्री वर्णेकर संस्कृत के राष्ट्रवादी कवि हैं जिनकी पृष्ठभूमि भारत की दासता से विमुक्ति-आन्दोलन से संपोषित रही है। अतः आज के उच्छृंखल राजनीतिक वातावरण में भी राष्ट्रभक्त वर्णेकर का "श्रीशिवराज्योदयम्" महाकाव्य उतना ही उपयोगी और उपादेय है, जितना वह अपने प्रणयन के काल में था। डॉ० अभिनव शुक्ल ने राष्ट्र की 'नाड़ी' को पहचान कर, मेरे निर्देशन में दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएच०डी० उपाधि हेतु **"श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन"** शीर्षक शोध-प्रबन्ध लिख कर, उसके सारस्वत उपचार का प्रयत्न किया। अपने प्रयत्न में उन्हें पूर्ण सफलता मिली है। अतः वे बधाई के पात्र हैं। उनका उपर्युक्त शोध-प्रबन्ध सम्प्रति अविकल रूप में सुधी जनों के सम्मुख प्रस्तुत है।

डॉ० अभिनव शुक्ल का अध्ययन एवं अध्यवसाय निःसन्दिग्ध प्रशस्य है। उन्होंने अपने विषय को हस्तामलकवत् ग्रहण करके समस्त काव्य का विवेचन किया है। अध्ययन-सौकर्य की दृष्टि से पुस्तक को आठ अध्यायों में व्यवस्थित

किया गया है । प्रथम अध्याय में महाकाव्य के साहित्य-शास्त्रीय स्वरूप की चर्चा करते हुए अर्वाचीन संस्कृत महाकाव्यों के रूपवैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला गया है। एतदतिरिच्य, "श्रीशिवराज्योदयम्" का महाकाव्यत्व प्रमाणित किया गया है । अभिनव संस्कृत महाकाव्यों के अध्ययनार्थ यह एक नूतन दिशा है और प्रस्तुत अध्ययन की सुदृढ़ पृष्ठभूमि भी । द्वितीय से पञ्चम अध्याय पर्यन्त "श्रीशिवराज्योदयम्" का साहित्यशास्त्रीय विवेचन वस्तु, नायक, रस, वर्णन-विच्छित्ति, गुण-रीति-अलङ्कार-छन्द एवं सङ्गीत की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है । यहां विषय-विवेचन में लेखक की गंभीरता और तटस्थता सराहनीय है । षष्ठ एवं सप्तम अध्यायों में "श्रीशिवराज्योदयम्" के 'समकालीन युगबोध' तथा 'वैचारिक पक्ष' का विश्लेषण प्राप्त होता है । अष्टम अध्याय उपसंहारमूलक है और ग्रन्थ के अन्त में 'परिशिष्ट' में 'सहायक ग्रन्थों' की सूची संलग्न की गई है ।

पुस्तक निस्सन्देह अत्युत्तम एवं अपने उद्देश्य में सर्वथा सफल है। इसमें शोध-प्रविधि का पूर्णतया पालन किया गया है । भाषा सरल एवं विषय-प्रतिपादन में सर्वथा सक्षम है । लेखक में विषय-विश्लेषण एवं समुपस्थापन की अद्‌भुत क्षमता है । यह पुस्तक जब शोध-प्रबन्ध के रूप में तीन परीक्षकों के पास परीक्षार्थ प्रेषित की गई थी तो तीनों ने ही समवेत स्वर से अपनी-अपनी आख्या में इसकी भूरिशः प्रशंसा की थी। एक विद्वान् परीक्षक का मन्तव्य तो इस रूप में अभिव्यक्त हुआ था–

"साहित्यशास्त्र के जिज्ञासुओं एवं शोध-कर्ताओं के लिये यह शोध-प्रबन्ध अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि इस शोध-प्रबन्ध के अनुशीलन के बाद लक्षण-ग्रन्थों के अध्ययन की सामान्य रूप से आवश्यकता नहीं पड़ सकती ।"

ऐसी महनीय आद्या कृति के प्रकाशनार्थ में आयुष्मान् डॉ० अभिनव शुक्ल को हार्दिक वर्धापन और स्नेहसंवलित शुभाशीष देता हूँ। देवाधिदेव महादेव औढरदानी शिव से प्रार्थना है कि लेखक का सर्वविध अभ्युदय सम्पन्न करें ।

21 अगस्त 2007

चन्द्र भूषण झा

(चन्द्रभूषण झा)

भूमिका

संस्कृत महाकाव्यों की समृद्ध परम्परा है । इन महाकाव्यों में जहाँ एक ओर अपने युग को जनजीवन का चित्रण हुआ है, वहीं दूसरी ओर वे आने वाले युग की प्रेरणा भी देते हैं । प्रबन्ध-रचना होने के कारण महाकाव्य अपने युग का ज्ञानकोष होने के साथ-साथ भावी महाकवियों और सहृदयों के लिए उत्कृष्ट मनोरंजन एवं प्रेरणा का उत्स होता है । डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर (31.7. 1918-10.4.2000) द्वारा प्रणीत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य भी उक्त कथन का पोषक है ।

'श्रीशिवराज्योदयम्' एक विशालकाय महाकाव्य है । इसमें 68 सर्ग और 3865 श्लोक हैं । इस महाकाव्य के प्रणेता महाकवि डॉ० श्रीधर भास्कर वर्णेकर हैं । इस महाकाव्य की सर्जना का श्रीगणेश सन् 1958 में हुआ । धीरे-धीरे पूर्ण कलेवर को प्राप्त कर ग्रंथ सन् 1968 में सम्पूर्ण हुआ तथा सन् 1972 में शारदा गौरव ग्रन्थमाला, 425 सदाशिव पेठ, पूना-30 से प्रकाशित हुआ।

यद्यपि 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का महत्त्व राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति के कारण सर्वाधिक उल्लेखनीय माना जाता है तथापि संस्कृत महाकाव्यों की गरिमामय परम्परा के उत्तमांश का उसमें अवलोकन किया जा सकता है । इस महाकाव्य की रचना में साहित्यशास्त्रीय मान्यताओं का पर्याप्त मात्रा में अनुसरण तो किया ही गया है साथ ही कवि ने कहीं-कहीं प्रौढिप्रकर्ष से पुराण रीति का व्यतिक्रम करके अपनी प्रयोगपरता का भी प्रकाशन किया है।

इस महाकाव्य में डॉ० वर्णेकर ने भारत, भारतीयता, भारतीय संस्कृति और सभ्यता के संरक्षक, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के परमोपासक छत्रपति शिवाजी के जीवनचरित का साङ्गोपाङ्ग वर्णन किया है । फलस्वरूप यह महाकाव्य राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत हो गया है।

महाकाव्य का विवेचन साहित्यशास्त्र का महत्त्वपूर्ण अङ्ग है, जिसमें समय-समय पर परिवर्तन, परिवर्धन तथा हानोपादान होते रहे हैं । सन् 1958 से सन् 1968 तक रचे गये एवं 1972 में प्रकाशित 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन अब भी अपेक्षित था, जिसके प्रकाश में आने पर महाकाव्य के स्वरूप, विकास एवं बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीय भावनापरक विचारों एवं भावाभिव्यक्तियों का वैभव उजागर हो सकता था ।

'श्रीशिवराज्योदयम्' एक विशाल महाकाव्य है । इस महाकाव्य के विषय में आचार्य रमेशचन्द्र शुक्ल जी का 'शिवराज्योदय समीक्षा' शीर्षक लेख अर्वाचीनसंस्कृतम् के प्रवेशाङ्क (1/1) जुलाई, 1979 में प्रकाशित हुआ था । डॉ०

हरिनारायण दीक्षित ने देववाणी-परिषद्, दिल्ली से 1984 में प्रकाशित अपने डी० लिट्० शोध प्रबंध 'संस्कृत साहित्य में राष्ट्रिय भावना' में लगभग दो पृष्ठों (244 से 246 तक) में इसकी राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है। सौ० उर्मिला अराणके ने 'अर्वाचीनसंस्कृतम्' में प्रकाशित एक लेख में इस महाकाव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय विचारधाराओं को रेखाङ्कित किया है। डॉ० रहसबिहारी द्विवेदी ने 2001 में प्रकाशित अपने शोध-प्रबन्ध 'संस्कृत महाकाव्यों का समालोचनात्मक अध्ययन' के सप्तम अध्याय (पृष्ठ 201-239) में इसका समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । किन्तु इस सामग्री पर भी कवि परिचय, महाकाव्य के कथानक, रसविचार तथा छन्दोयोजना आदि के आधार पर कई दृष्टियों से पुनर्विचार अपेक्षित प्रतीत हुआ। दिल्ली वि०वि० में तो प्रस्तुत शोधकार्य से पूर्व इस वृहदाकार संस्कृत महाकाव्य के विषय में कोई शोधकार्य हुआ ही नहीं था।

इस स्थिति में प्रस्तुत शोधकर्ता ने 'श्रीधर भास्कर वर्णेकर-कृत श्रीशिवराज्योदयम् महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन' विषय पर संस्कृत विषयक शोध उपाधि (पीएच०डी०) के लिये अनुसंधान का प्रस्ताव किया जिसे दिल्ली विश्वविद्यालय ने 2003 में स्वीकार कर लिया तथा संस्कृत विभाग में शोधकार्य करने की अनुमति प्रस्तुत शोधकर्ता को दे दी। न इस ग्रन्थ पर कोई संस्कृत की टीका उपलब्ध है और न हिन्दी अनुवाद। अतः इसके पौनःपुन्येन पारायण के अनन्तर साहित्यशास्त्र के आलोक में इसका अध्ययन किया गया।

शोधकार्य 8 अध्यायों में किया गया है जिसकी रूपरेखा विषय-सूची में आगे प्रदत्त है। इस शोधकार्य में मेरे शोधनिर्देशक गुरुवर डॉ० चन्द्रभूषण झा ने अनेक ग्रन्थ सुलभ कराकर तथा समय-समय पर अनेक दिशानिर्देश देकर मेरी सहायता की है। डॉ० झा आधुनिक संस्कृत साहित्य के गम्भीर अध्येता और लेखक हैं। मैं डॉ० झा का आभार मानता हूं ।

मेरे पूज्य ताऊजी डॉ० उमाकान्त शुक्ल के व्यक्तिगत समृद्ध पुस्तकालय एवं देववाणी-परिषद्, दिल्ली के पुस्तकालय से मुझे पर्याप्त सहायता मिली है। कवि-परिचय सम्बन्धी सामग्री सुलभ कराने के लिए मैं डा० आनन्द कुमार पाठक का आभारी हूं । इसके अतिरिक्त दिल्ली विश्वविद्यालय के केन्द्रीय शोध ग्रन्थागार (सी०आर०एल०) से भी मेरी समझ समृद्ध हुई है। मैं इनके प्रति कृतज्ञ हूं। शोध प्रबन्ध के प्रकाशन की अनुमति देने के लिए दिल्ली वि०वि० का तथा इसे प्रकाशित करने के लिए 'देववाणी-परिषद्, दिल्ली' का धन्यवाद करता हूं।

आर 6, वाणी विहार, नई दिल्ली-110059
दिनांक : 21 अगस्त, 2007

(अभिनव शुक्ल)

संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण के विषय में

"श्रीधर भास्कर वर्णेकर-कृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्य-शास्त्रीय अध्ययन" विषय पर शोधकार्य करने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय ने मुझे 2003 में अनुमति दी थी । 27 दिसम्बर 2005 को शोधप्रबन्ध विश्वविद्यालय में परीक्षण के निमित्त प्रस्तुत कर दिया गया था । दिसम्बर 2006 में इस पर पीएच०डी० उपाधि दे दी गयी । 21 अगस्त 2007 को देववाणी-परिषद्, दिल्ली से इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ । 26 अक्टूबर, 2007 को देववाणी-परिषद् द्वारा आयोजित बीसवें 'पण्डितराज-महोत्सव' के अवसर पर समारोहाध्यक्ष श्रद्धेय प्रो० रामकरण शर्मा जी ने इसका 'विद्वदर्पण' किया । मुख्यातिथि प्रख्यात संस्कृत कवि और काव्यशास्त्री डा० शंकरदेव 'अवतरे', गुरुवर डा० रामसुरेश पाण्डेय तथा मेरे शोधनिर्देशक डा० चन्द्रभूषण झा ने इस पर अपने विचार प्रस्तुत किये ।

अनेक विद्वानों के पास ग्रन्थ भेजा गया जिनमें से अनेक ने लिखित रूप में अपने विचार/सन्देश/शुभाशंसा/सम्मति कृपापूर्वक भेजकर मुझे अनुगृहीत किया । इस संस्करण में सर्वश्रद्धेय प्रो० रामकरण शर्मा, प्रो० सत्यव्रत शास्त्री, प्रो० मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी, प्रो० हरिनारायण दीक्षित, प्रो० रहस बिहारी द्विवेदी, प्रो० श्रीधर वसिष्ठ, डा० चौडूरि उपेन्द्रराव, प्रो० राजेन्द्र मिश्र तथा प्रो० वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री के विचार/शुभाशंसा ग्रन्थ से पूर्व सम्मिलित कर दिये गये हैं । मैं इन सभी विद्वजनों का प्रणतिपूर्वक आभार मानता हूं ।

आदरणीय प्रो० 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र जी ने अपने 'नान्दीवाक् में 'अभिराजयशोभूषणम्' का उपयोग करने का सत्परामर्श मुझे दिया है । चूंकि अभिराजयशोभूषण की प्रकाशनतिथि जुलाई 2006 से पूर्व ही दिसम्बर 2005 में शोधप्रबन्ध प्रस्तुत कर दिया गया था, अतः उक्त ग्रन्थ का लाभ मैं नहीं उठा सका । इसमें दैव ही कारण है ।

प्रथम संस्करण के कुछ पृष्ठों में कम्प्यूटर की टैक्नीकल लीला के कारण कतिपय अशुद्धियां रह गयी थी । उन पृष्ठों का संशोधित मुद्रण कर दिया गया है । इसके अतिरिक्त ग्रन्थ के अन्त में शुद्धि-पत्र भी संलग्न कर दिया गया है । इसके अतिरिक्त यदि लेखक, अक्षरयोजक अथवा प्रूफपाठक के प्रमाद या

अनवधान से कोई अशुद्धि/त्रुटि रह गयी हो तो उसके लिए मैं विद्वज्जनों से क्षमा चाहता हूं। यदि वे कृपापूर्वक मुझे सूचित करेंगे और यदि इस ग्रन्थ का आगे कोई संस्करण निकला तो उसमें उन्हें अवश्य दूर कर दिया जायेगा।

इसी बीच (मार्च 2008 में) राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली ने प्रथम संस्करण की पचास प्रतियां क्रय करके विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं को भेंट कीं, एतदर्थ में संस्थान का आभार मानता हूं।

प्रथम संस्करण की भूमिका में मैं स्थानानुरोध से कुछ तथ्यों का उल्लेख नहीं कर सका था। इस संस्करण में भूमिका के लिए दुगुना स्थान सुलभ हुआ है। अतः कुछ बातों का उल्लेख करना अपना कर्तव्य समझता हूं। शोध-प्रबन्ध के लेखन और प्रकाशन के समय मेरे परिवार-जनों का प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग मुझे सुलभ हुआ है। उदाहरणार्थ छन्दःसारिणी तैयार करते समय मेरे पूज्य माता-पिता डा० रमाकान्त शुक्ल-श्रीमती रमादेवी शुक्ला, मेरे अग्रज द्वय-डा० चन्द्रमौलि शुक्ल एवं श्री आनन्दवर्धन शुक्ल, बड़ी भाभी-श्रीमती अनीता शुक्ला एवं छोटी भाभी श्रीमती रीना शुक्ला तथा तथा भतीजियां अर्चिता और शिवांगी यदि एक एक छन्द की पर्चियां अपने हाथों में लेकर गिन गिन कर मुझे न बताते तो इस काम में पर्याप्त समय लगता। इन लोगों की सहायता से काम चुटकियों में हो गया। अब इस संशोधित-परिवर्धित संस्करण का शुद्धिपत्र तैयार करने के समय एक भतीजा वरद और एक भतीजी-शुभांगी अपनी किलकारियों और तोतले वचनों से मेरे मन को स्फूर्त और बोझहीन रखने में सहायता कर रहे हैं। मैं इन सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करूं या धन्यवाद ज्ञापन करूं तो औपचारिकता मात्र होगी। इन सभी का आशीर्वाद और सद्भावना मुझ पर बने रहें, प्रभु से यह प्रार्थना करता हूं। मैंने 'श्रीशिवराज्योदयम्' के कुछ सर्गों का हिन्दी अनुवाद एवं टिप्पणियां तैयार की हैं। देखें, उनके प्रकाशन का समय कब आता है!

आर 6, वाणी विहार, नई दिल्ली-110059
गुरुपूर्णिमा वि०सं० 2065
दिनांक 18.7.2008

(अभिनव शुक्ल)

प्रथम संस्करण का विद्वदर्पण

(२६.१०.२००७)

'देववाणी-परिषद्, दिल्ली' संस्था द्वारा 'रमालय' आर-6 वाणी-विहार, नई दिल्ली में दिनांक 26.10.2007 को समायोजित बीसवें 'पण्डितराज-महोत्सव' के अवसर पर "श्रीधर भास्कर वर्णेकर-कृत 'श्रीशिवराज्योदयम्' महाकाव्य का साहित्यशास्त्रीय अध्ययन" ग्रन्थ का 'विद्वदर्पण' सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर (बायें से दायें) कार्यक्रम संचालक आचार्य डा० रवीन्द्र नागर (कुछ दिखाई देते), शोधप्रबन्ध निर्देशक डा० चन्द्रभूषण झा, परिषन्महासचिव डा० रमाकान्त शुक्ल, ग्रन्थकर्ता डा० अभिनव शुक्ल, परिषद् की उपाध्यक्ष श्रीमती रमा शुक्ला, ग्रन्थ दर्शन कराते समारोहाध्यक्ष डा० रामकरण शर्मा, मुख्यातिथि डा० शंकरदेव 'अवतरे' तथा वक्ता डा० रामसुरेश पाण्डेय (कुछ दिखाई देते)।

समर्पण

पूज्य पितामही श्रीमती प्रियंवदा जी शुक्ला
(धर्मपत्नी स्व० आचार्य श्री ब्रह्मानन्द जी शुक्ल),
जिनकी चौथी पीढ़ी तक स्वान्तःसुखाय
संस्कृत समुपासना का क्रम
अविच्छिन्न रूप से चला आ रहा है,
के कर कमलों में यह ग्रन्थ
सादर समर्पित है ।

—अभिनव

UNIVERSITY OF DELHI
Delhi-110007

No. Exam-IV/Ph.D./7775/
Delhi the 1st August 2007

Dr. Abhinav Shukla
R-6, Vani Vihar
New Delhi-110059.

Sir,

Please refer to your letter dated **30/07/2007** requesting for grant of permission to Publish your thesis entitled **"Shridhara Bhaskara Varnekara Krita Shri Shivarajyodayam Mahakavya Ka Sahityashastriya Adhyayana"** submitted for the Ph. D. degree from the Department of **Sanskrit** of this University.

I am glad to inform you that the University authorities have been pleased to permit you to publish your thesis. The thesis so published should bear a clear indication on the title page that **"this is a thesis that had been approved by the University of Delhi for the award of the Ph.D. degree".**

Please acknowledge receipt of this letter.

Yours faithfully

Asstt. Controller of Examinations (D)

Enrol. No. S-170/95

University of Delhi

निष्ठा धृतिः सत्यम्

DOCTOR OF PHILOSOPHY

This is to certify that Abhinav Shukla after approval of his/her thesis on "Shridhara Bhaskara Varnekara Krita Shri Shivarajyodayam Mahakavya Ka Sahityashastriya Adhyayan." in November, 2006, has been admitted to the degree of Doctor of Philosophy in this University at the Convocation held in 2007.

दिल्ली विश्वविद्यालय UNIVERSITY OF DELHI निष्ठा धृतिः सत्यम्

Registrar, University of Delhi.

Delhi, dated the 24th February, 2007

Vice-Chancellor, University of Delhi.